महावीरप्रसाद द्विवेदी की कविताओं में युगीन–संदर्भ

.·

शोध–निर्देशक

मणिकांत ठाकुर

हिंदी विभाग

वाई. बी. एन. विश्वविद्यालय

राँची (झारखंड), भारत

शोधार्थी

भैया विवेक प्रियदर्शी

हिंदी विभाग

वाई. बी. एन विश्वविद्यालय

राँची, झारखंड, भारत

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

महावीरप्रसाद द्विवेदी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

क) महावीरप्रसाद द्विवेदी : जीवनवृत्त

ख) महावीर प्रसाद द्विवेदी की साहित्य–साधना

ग) 'सरस्वती' का संपादन एवं युग–निर्माण

घ) हिंदी नवजागरण में द्विवेदी जी की भूमिका

द्वितीय अध्याय

साहित्य, समाज और युगीन–संदर्भ

क) साहित्य समाज और युगीन : संदर्भ

ख) द्विवेदीयुगीन कविताएँ : युगीन–संदर्भ

तृतीय अध्याय

महावीरप्रसाद द्विवेदी की कविताओं में युगीन–संदर्भ

क) ब्रजभाषा की कविताओं में युगीन–संदर्भ

ख) सरगौं नरक ठेकाना नाहिं (बैसवाड़ी : कविता) : युगीन–संदर्भ

ग) श्रृंगार–बोध की कविताएँ : युगीन–संदर्भ

घ) भाषा एवं साहित्य संबंधी कविताएँ : युगीन–संदर्भ

ड.) सामाजिक चिंतन की कविताएँ : युगीन–संदर्भ

च) बाल–कविताएँ : युगीन–संदर्भ

छ) उद्‌बोधनपरक कविताएँ :युगीन संदर्भ

चतुर्थ अध्याय

संस्कृत में अनूदित कविताएँ : युगीन –संदर्भ

क संस्कृत में लिखित कविताओं में युगीन–संदर्भ

ख अनूदित कविताओं में युगीन–संदर्भ

पंचम अध्याय

परवर्ती हिंदी कविताओं में वर्णित युगीन संदर्भो पर द्विवेदी जी का प्रभाव

षष्ठ अध्याय

महावीरप्रसाद द्विवेदी की आलोचना एवं कवि–कर्म की प्रासंगिकता

उपसंहार

परिशिष्ट

क) आधार ग्रंथ

ख) सहायक ग्रंथ

ग) पत्र–पत्रिकाएँ

महावीरप्रसाद द्विवेदी की कविताओं में युगीन–संदर्भ

प्रस्तावना

हिंदी–जगत में आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी एक युग प्रवर्त्तक साहित्यकार के रूप में ख्यातिप्राप्त हैं। उन्होंने अपने गहन आलोचनात्मक चिंतन, संपादकीय प्रबंधन, भाषा–परिमार्जन एवं खड़ीबोली हिंदी में मौलिक काव्य–सृजन से आधुनिक हिंदी साहित्य के चतुर्दिक विकास की सुदृढ़ आधारशिला रखी। उनके इस अमूल्य योगदान को केंद्रित करते हुए हिंदी साहित्य के इतिहासकारों ने 1900 ई. से 1920 ई. तक की अवधि को 'द्विवेदी–युग' के नाम से अभिहित किया। बहुमुखी प्रतिभा के धनी महावीरप्रसाद द्विवेदी युगांतर लाने वाले महापुरुष, सुलझे हुए भाषाशास्त्री, वस्तुनिष्ठ अनुवादक एवं दृष्टि–संपन्न अर्थशास्त्री थे। महात्मा गाँधी के समग्र चिंतन में जो स्थान 'हिंद–स्वराज्य' का है, वही स्थान महावीरप्रसाद द्विवेदी के साहित्य–चिंतन में 'संपत्तिशास्त्र' का है। उनकी आलोचना दृष्टि एवं समग्र कविकर्म में 'संपत्तिशास्त्र' का गहन मौलिक चिंतन अंतर्निहित है।

इसे विडंबना ही माना जाएगा कि हिंदी–जगत में द्विवेदी जी की साहित्यिक छवि महज एक 'तानाशाह रवैया रखने वाले आचार्य' और

'आदर्शवादी संपादक' की बनकर रह गई। उन्हें कविताओं की पंक्तियाँ दुरुस्त करने वाले निष्ठुर संपादक तो माना गया, किंतु वे मानवीय संवेदनाओं से आप्लावित एक भाव–प्रवण कवि भी थे, इस सच्चाई से हिंदी का सामान्य पाठक अभी तक अवगत नहीं हो पाया है। वास्तविकता यह है कि द्विवेदी जी खड़ीबोली हिंदी की प्रथम पीढ़ी के एक महत्त्वपूर्ण कवि भी थे, जिन्होंने अपनी आरंभिक काव्य–रचनाओं से हिंदी काव्यांदोलन को एक नई गति और नई दिशा दी। यह ऐतिहासिक सच्चाई है कि भारतेंदु जी ने खड़ीबोली हिंदी को गद्यात्मक विधाओं के लिए तो उपयुक्त माना था, किंतु खड़ीबोली हिंदी मे छिटपुट रचनाएँ करने के बावजूद भी ब्रजभाषा के व्यमोह से वे पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाए थे। कमोबेश यही स्थिति स्वच्छंदतावादी कवि श्रीघर पाठक, रामनरेश पाठक और मुकुटधर पाण्डेय की भी थी जो कि 1900 से 1905 ई. के बीच तक की रचनाओं में खुद को द्वंद्व की स्थिति में पा रहे थे। खड़ीबोली हिंदी को कविता की भाषा के रूप में आंदोलन चलाने वाले द्विवेदी जी ने दृष्टांत स्वरूप इस नवीन भाषा में सैकड़ों मौलिक और अनूदित कविताएँ लिखकर नवोदित कवियों में आत्म–विश्वास पैदा किया। प्रख्यात आलोचक डॉ रामविलास शर्मा ने अपनी पुस्तक 'हिंदी नवजागरण और महावीरप्रसाद द्विवेदी' (1977 ई0) में द्विवेदी जी को नवजागरण के अग्रदूत के रूप में तो स्थापित कर दिया, किंतु उनका कवि व्यक्तित्व यहाँ भी उपेक्षित रहा। आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य नंददुलारे बाजपेयी एवं हजारीप्रसाद द्विवेदी सरीखे बड़े इतिहासकार एवं आलोचकों ने द्विवेदी जी के आलोचना कर्म को उनके आलोचात्मक निबंधों की चर्चा करते हुए इस विधा मे उनके ऐतिहासिक महत्त्व को कमोबेश स्वीकार भी किया, किंतु उनके 'कवि–व्यक्तित्व' का समग्रता से अवमूल्यन किया। उपरोक्त तीनों बड़े आलोचकों एवं इतिहासकारों ने द्विवेदी जी के द्वारा किए गए भाषा–परिष्कार कार्य, ऐतिहासिक महत्त्व वाली 'सरस्वती' पत्रिका के संपादन–कार्य आचार्यत्व एवं आलोचना–कर्म को महत्त्व तो दिया किंतु इनका 'कविकर्म' उपेक्षित ही रहा। इस दृष्टि से

महावीरप्रसाद द्विवेदी की कविताओं के युगीन संदर्भो एवं सामाजिक–चिंतन की गहरी पड़ताल एवं उनके उन कविताओं के कलात्मक स्वरूप का सम्यक मूल्यांकन हिंदी के लिए शोध के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण कार्य होगा।

साहित्य की प्रारंभिक समीक्षा/ अद्यतन स्थिति

महावीरप्रसाद द्विवेदी जी के जीवनकाल में ही वर्ष 1933 ई एक भव्य 'अभिनंदन–समारोह' का आयोजन द्विवेदी जी के अनुरागियों के द्वारा किया गया था। इस अवसर पर 'आचार्य अमर रहें' के नाम से एक 'अभिनंदन–ग्रंथ' का प्रकाशन भी हुआ था। इस ऐतिहासिक महत्त्व वाले ग्रंथ की भूमिका आचार्य नंददुलारे बाजपेयी ने लिखी थी। इस ग्रंथ में प्रेमचंद, निराला और पंत जैसी महान विभूतियों के बड़े भाव–प्रवण आत्मपरक निबंध संकलित हैं जिनमें द्विवेदी जी की साहित्य साधना का मूल्यांकन कार्य भी हुआ है। एक लंबे कालखंड के पश्चात वर्ष 1977 ई में हिंदी में प्रख्यात आलोचक रामविलास शर्मा द्वारा 'महावीरप्रसाद द्विवेदी और हिंदी पुनर्जागरण' नाम से एक ऐतिहासिक महत्त्व वाला गौरव ग्रंथ प्रकाशित हुआ। तत्पश्चात डॉ. भारत यायावर ने द्विवेदी जी की समग्र साहित्य–साधना को 'महावीरप्रसाद द्विवेदी रचनावली' नाम से पंद्रह खंडों में प्रकाशित किया। इस संदर्भ में 'युग निर्माता' नाम से नंद किशोर नवल द्वारा एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण परिचयात्मक आलोचना की पुस्तक भी आई। हिंदी के प्रख्यात व़िद्वान डॉ. उदयभानु सिंह के द्वारा द्विवेदी जी किया गया कार्य भी अत्यंत वस्तुनिष्ठ एवं मूल्यांकन परक है।

समस्या–कथन

प्रस्तावित शोध–विषय 'महावीरप्रसाद द्विवेदी की कविताओं में युगीन–सदर्भ' में 'संपत्तिशास्त्र' के आलोक में द्विवेदी जी के मौलिक अर्थशस्त्रीय चिंतन के साथ–साथ उनकी कविताओं में ध्वनित युगीन–संदर्भो की गवेषणा के अंतर्गत आने वाली समस्याओं को

निम्नलिखित रूप से रेखांकित किया जाएगा। इसके निमित्त मैंने कुछ प्रमुख अध्ययन–बिंदु तय किए हैं, जो इस प्रकार हैं–

1 वर्ष 1908 ई में प्रकाशित 'संपत्तिशस्त्र' पुस्तक में द्विवेदी जी के अर्थशास्त्रीय चिंतन की गहन पड़ताल करना जिसका व्यापक और गहरा प्रभाव उनकी समग्र साहित्य–साधना पर रहा।

2 शोधकार्य में द्विवेदी जी द्वारा ब्रजभाषा एवं खड़ीबोली हिंदी में लिखित उन यथार्थवादी रचनाओं की पड़ताल करना जो आगे चलकर निराला, पंत एवं अन्य यथार्थवादी रचनाकारों के लिए प्रेरणास्त्रोत बनीं।

3 द्विवेदी जी के द्वारा संस्कृत की क्लासिक रचनाओं के काव्यानुवाद के रूप में लिखी उन सरस रचनाओं के सौंदर्यबोध की ओर हिंदी पाठकों का ध्यान आकर्षित करना, जिन रचनाओं ने हिंदी कविता–जगत में पहली बार यह संकेत दिया कि खड़ीबोली की खड़खड़ाहट में भी माधुर्य के गीत गाये जा सकते हैं।

4 आरंभिंक दौर में हिंदी कविता में लिखी जा रही भाषा की प्रासादिकता में सनी ऐसी सरल, स्वच्छ एवं मानवीय मूल्यों से ओत–प्रोत कविता–धारा को रेखांकित करना, जिनके प्रभाव से द्विवेदी–युग के बाद 'नायिका–भेद' और 'समस्या–पूर्ति' वाली काव्य–परंपरा पूरी तरह अवरुद्ध हो गई।

5 महावीरप्रसाद द्विवेदी द्वारा सरस हास्य एवं प्रच्छन्न व्यंग्य से भरपूर वैसी कविताओं का पुनर्मूल्यांकन करना, जो 'प्रेस–एक्ट' की मौजूदगी के बाद भी उस अंग्रेजी राज–व्यवस्था के विरुद्ध जाकर बहुत कुछ कहने का साहस करती हैं।

शोध का उद्‌देश्य

प्रस्तावित शोध–विषय 'संपत्तिशास्त्र एवं महावीरप्रसाद द्विवेदी की कविताओं में युगीन–संदर्भ' के तर्कपूर्ण विश्लेषण के बाद निम्नलिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया जाएगा–

1 मेरे अध्ययन का केंद्रीय शोध उद्देश्य द्विवेदी जी की कविताओं में उन प्रगतिशील तत्त्वों की पड़ताल करना है जिन्हे विद्वानों के एवं पाठकों के द्वारा अब तक इतिवृत्तात्मक, उपदेशात्मक, गद्यात्मक या कोरी नैतिकता जैसी नारेबाजी एवं फतवेबाजी के शोरगुल में अनसुना कर दिया गया।

2 मेरे अध्ययन का एक महत्त्वचूर्ण पहलू कविता के उन सार्वकालिक प्रतिमानों और मूल्यों की खेज करना भी होगा जो पहली बार हिंदी में द्विवेदी जी के द्वारा स्थापित किए गए। पुनः उनका परवर्ती विद्वानों के द्वारा विरोध के नाम पर विरोध किया गया तथों शब्दों के हेर–फेर के साथ उन्हें आत्मसात किया गया।

3 मेरा उद्देश्य आधुनिक हिंदी कविता के उन मूलभूत सूत्रों की गवेषणा करना होगा जिन्हें हिंदी में पहली बार आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के द्वारा प्रस्तावित किया गया।

शोध–प्रश्न या परिकल्पनाएँ

प्रस्तावित शोध–कार्य में जिन प्रश्नों के उत्तरों की पड़ताल करनी है, वे इस प्रकार हैं–

1 कवि महावीरप्रसाद द्विवेदी की कविताओं का सृजन–संसार कहाँ तक विस्तृत है?

2 महावीरप्रसाद द्विवेदी के कवि–व्यक्तित्व का निर्माण किन सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में हुआ है?

3 कवि महावीरप्रसाद द्विवेदी अपनी कविताओं में युगीन–संदर्भों को स्वर देने में कहाँ तक सफल हुए है?

4 द्विवेदी जी अपने समकालीन कवियों में कहाँ खड़े है?

5 परवर्ती काव्यधारा को एक कवि के रूप में द्विवेदी जी ने किन रूपों में प्रभावित किया है?

प्रमुख अध्ययन–बिंदु :

प्रस्तावित शोध–कार्य में जिन अध्ययन–बिंदुओं को गवेषणा के केंद्र में रखा जाएगा, वे निम्न हैं–

1 द्विवेदी जी खड़ीबोली हिंदी के आरंभिक दौर के एक महत्त्वपूर्ण कवि थे। एक कवि के रूप में उन्होंने खड़ीबोली हिंदी में लीक से हटते हुए यथार्थवादी कविताओं का सूत्रपात किया, वहीं एक नेता के रूप में खड़ीबोली हिंदी काव्यांदोलन को सही दिशा देते हुए द्विवेदीयुगीन काव्य को एक गौरवमयी ऊँचाई दी।

2 वस्तुतः द्विवेदी जी ने जिन दिनों हिंदी में लिखना प्रारंभ किया उस समय तक ब्रजभाषा की कविताओं की ही प्रधानता थी। भारतेंदु हरिश्चंद्र एवं उनके मण्डल के साहित्यकारों ने गद्य के लिए भले ही खड़ीबोली को अपना लिया था, किंतु स्वयं भारतेंदु का यह मानना था कि कविता के लिए ब्रजभाषा ही उपयुक्त है।

3 भारतेंदु के बाद श्रीधर पाठक ने 1885 ई0 में खड़ीबोली हिंदी में 'एकांतवासी योगी' लिखकर पर्याप्त लोकप्रियता भी अर्जित कर ली थी, किंतु वे पुनः ब्रजभाषा में लिखने लगे थे। यही हाल हिंदी के लगभग सभी जमे हुए कवियों का था।

4 द्विवेदी जी के नेतृत्त्व में श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी, मुकुटधर पाण्डेय, लोचनप्रसाद पाण्डेय, अयोध्यासिंह उपाध्याय

'हरिऔध, शंकर एवं मैथिलीशरण गुप्त जैसे कवि रचनाशील थे। ये सभी कवि प्रत्यक्षतः अथवा परोक्षतः द्विवेदी जी द्वारा खड़ीबोली हिंदी में चलाये जा रहे काव्यांदोलन से जरूर प्रभावित थे, किंतु द्वंद्व की स्थिति में थे। दृष्टांत स्वरूप खड़ीबोली हिंदी में सामाजिक सरोकार वाली कविताएँ लिखकर इस द्वंद्व को हमेशा के लिए समाप्त कर दिया।

5 यदि द्विवेदी जी को खड़ीबोली हिंदी का नेतृत्त्व नहीं मिलता तो न तो इतनी शीघ्रता से भाषागत अराजकता नियंत्रित हो पाती और न ही छायावाद जैसे स्वर्णयुग को द्विवेदीयुगीन काव्य की सुदृढ़ पीठिका ही प्राप्त हो पाती।

6 कविता—लेखन के आरंभिक काल में द्विवेदी जी ने काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा को जरूर अपनाया, किंतु शुरु से ही उन्होंने सामंती—सौंदर्य से लदी—फदी श्रृंगारिक कविताओं का विरोध किया और पहली बार ब्रजभाषा में सामाजिक यथार्थ से जुड़ी कविताएँ लिखीं।

7 द्विवेदी जी ने संस्कृत में जो फुटकल कविताएँ लिखीं, उनमें भी धार्मिक पाखण्ड एवं ठगी पर आधारित कर्मकाण्ड का विरोध किया गया है। इस प्रकार आरंभ से ही द्विवेदी जी का सामाजिक चिंतन अत्यंत प्रखर था।

8 द्विवेदी जी ने आरंभ में कालिदास, भ्रर्तृहरि, जयदेव और पण्डितराज जगन्नाथ की 'क्लासिक' रचनाओं का ब्रजभाषा एवं ब्रजभाषामिश्रित खड़ीबोली हिंदी में अनुवाद किया, उसका एक मात्र उद्‌देश्य हिंदी पाठकों का रुचि—परिष्कार करना था।

9 द्विवदी जी का विरोध सामंती—श्रृंगार की पतनशील प्रवृत्तियों से था। यद्यपि द्विवेदी जी की मौलिक कविताओं की संख्या बहुत

अधिक नहीं है, तथापि द्विवेदी जी की सभी प्रकार की कविताएँ खड़ीबोली हिंदी की काव्यभाषा के विकासात्मक स्वरूप को समझने के लिहाज से विशेष अध्ययन की अपेक्षा रखती हैं।

10 इतना ही नहीं, द्विवेदी जी की कविताओं को इतिवृत्तात्मक, उपदेशात्मक, गद्यात्मक, स्थूलता और नीरसता से भरी कविताएँ कहकर एक सिरे से खारिज़ करना या औसत दर्जे की कविताएँ करार देकर उन्हें चलता कर देना द्विवेदी जी के एतिहासिक महत्त्व वाले कवि–कर्म को झुठलाना उनके प्रति सरासर अन्याय होगा।

11 ये वहीं कविताएँ हैं जो आगे चलकर यथार्थवादी कविताएँ लिखने वाले निराला और पंत के लिए प्रेरणा का आधार बनीं। यही नहीं, यह द्विवेदी जी का स्वदेशानुराग ही था जो आगे चलकर सांस्कृतिक काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जैसे कवियों की कविताओं में प्रस्फुटित हुईं।

शोधकार्य की सीमाएँ

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपने जीवन–काल में पच्चासी पुस्तकें लिखीं। उनके युग–निर्माण एवं नवजागरण वाली वाली वृहत्तर साहित्य–साधना का लेखा–जोखा तो मेरे शोध का विषय होगा, किंतु अनावश्क रूप से बिखराव से बचने के लिए द्विवेदी के अर्थशास्त्रीय–चिंतन एवं 'कवि–कर्म' को ही केंद्र में रखा जाएगा। यह स्वतंत्र रूप से शोध का बड़ा ही रुचिकर विषय हो सकता है कि यदि 'सरस्वती' को द्विवेदी जी न मिले होते या द्विवेदी जी को 'सरस्वती' न मिली होती तो हिंदी का स्वरूप क्या होता? मेरे शोध–विषय में 'सरस्वती' की साधना की गहन पड़ताल तो होगी किंतु इस प्रकार की नवीन स्थापनाएँ मेरे अध्ययन परिधि से बाहर ही होंगी। जिन दिनों द्विवेदी जी हिंदी आलोचना के क्षेत्र में आए उन दिनों

हिंदी में मिश्रबंधुओं तथा पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' जैसे आलोचकों की धाक थी। कवियों में 'देव बड़े हैं या बिहारी'– हिंदी आलोचना की चिंता और चिंतन के केंद्र में यही मुद्दा सर्वाधिक ज्वलंत एवं महत्त्वपूर्ण था। पहली बार द्विवेदी जी ने 'नायिका–भेद' एवं 'लक्षण–ग्रंथ निरूपण' वाली आलोचना–परंपरा का पटाक्षेप करते हुए साहित्य को युगीन–संदर्भों से जोड़ कर देखने की दृष्टि दी। मेरे शोध–विषय में द्विवेदी जी के आलोचना कर्म की छान–बीन तो होगी, किंतु इस संदर्भ में भी किसी नवीन स्थापना का प्रयास मेरे अध्ययन क्षेत्र से बाहर होगा।

शोध–प्रविधि :

प्रस्तावित शोध–विषय की शोध–पद्धति वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं समीक्षात्मक होगी। शोध–कार्य तथ्याों पर आधारित, तर्क–सम्मत एवं कार्य–कारण संबंध पर आधारित होगा। शोधकार्य विवेचन, विश्लेषण से युक्त वैज्ञानिक दृष्टि पर आधारित होगा। यह शोध–कार्य स्थानीय पुस्तकालयों एवं केंद्रीय पुस्तकालयों के सहयोग से मानक एवं प्रामाणिक ज्ञान–सामग्रियों के आधार पर किया जाएगा। शोधकार्य को विश्वसनीय एवं स्तरीय बनाने के लिए विभिन्न शैक्षिक संस्थानों एवं शोध–संस्थानों के विशेषज्ञों से भी अपेक्षित विचार–विमर्श एवं शैक्षिक सहायता ली जाएगी।

महत्त्व/ प्रस्तुत शोध का अपेक्षित योगदान :

1 शोध–कार्य में प्रामाणिक तथ्यों का संकलन कर सूक्ष्मगत रूप से अवलोकन तथा विवेचन–विश्लेषण कार्य किया जाएगा।

2 शोधकार्य को अद्यतन एवं प्रासंगिक बनाने के लिए बदली हुई सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों में तथ्याों का विवेचन–विश्लेषण आधुनिक परिप्रेक्ष्य में किया जाएगा।

3 प्रस्तावित शोधकार्य सरल–सहज भाषा–शैली में रुचिकर ढंग से किया जाएगा तथा अध्येताओं की जिज्ञासा आद्योपांत बनी रहे, इसका ध्यान रखा जाएगा।

4 प्रस्तावित शोध विषय से ज्ञान–भंडार में वृद्धि होगी तथा महावीरप्रसाद द्विवेदी के विषय में एक शोध–परक दृष्टि विकसित होगी। इससे परवर्ती शोधार्थियों एवं अध्येताओं को शोधकार्य एवं अध्ययन–अध्यापन में भरपूर सहायता मिलेगी।

5 प्रस्ताावित शोधकार्य भारतीय समाज, हिंदी साहित्य एवं भारतीय संस्कृति के विषय में एक सकरात्मक सोच विकसित करने में सहायक होगा।

6 प्रस्तावित शोध–कार्य द्विवेदी युग सहित समग्र आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रति एक स्पष्ट एवं सुलझी हुई अवधारणा विकसित करने में सहायक होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

कार्य–योजना :

प्रस्तावित शोधकार्य 'महावीरप्रसाद द्विवेदी की कविताओं में युगीन–संदर्भ' को विविध चरणों में चरणबद्ध तरीके से संपन्न किया जाएगा–

1 प्रथम चरण– शोधकार्य के प्रथम चरण में प्रथम छः महीनों में विभिन्न पुस्तकों से पुस्तक–संग्रहण, तथ्यों का संकलन कार्य पूरे करूँगा।

2 द्वितीय चरण– द्वितीय छमाही में अध्ययन एवं चिंतन के साथ–साथ सामग्री के वर्गीकरण का भी प्रयास होगा। साथ ही निदेशक सहित अन्य विशेषज्ञ विद्वानों से परामर्श लेते हुए वैचारिक विमर्श करूँगा।

3 तृतीय चरण— तृतीय चरण में विभिन्न पुस्तकालयों से संपर्क स्थापन के साथ—साथ प्रस्तावित शोध—कार्य के प्रथम एवं द्वितीय अध्याय के लेखन का कार्य भी करूँगा।

4 चतुर्थ चरण— शोध—कार्य की चतुर्थ छमाही में तृतीय एवं चतुर्थ अध्याय के लेखन का कार्य पूरे करूँगा।

5 पंचम अध्याय— शोध—कार्य की पाँचवीं छमाही में पंचम अध्याय एवं षष्ठ अध्याय का लेखन—कार्य पूरे करूँगा।

6 षष्ठ चरण— इस चरण में उपसंहार—लेखन, टंकण एवं संशोधन के कार्य संपन्न करूँगा।

शोध—प्रबंध के संभावित अध्याय की रूपरेखा

प्रस्तावित शोध—विषय को प्रस्तावना एवं उपसंहार के अतिरिक्त षष्ठ अध्यायों में बाँटकर शोधकार्य करने की योजना है।

प्रथम अध्याय में महावीरप्रसाद द्विवेदी के जीवनवृत्त और विविध विधाओं में उनके साहित्यिक योगदान का मूल्यांकन होगा।

द्वितीय अध्याय में समाज, साहित्य और युगीन संदर्भों के अंतर्संबंधों पर प्रकाश डाला जाएगा।

तृतीय अध्याय में महावीरप्रसाद द्विवेदी की कविताओं में ध्वनित युगीन—संदर्भो की पड़ताल की जाएगी।

चतुर्थ अध्याय में महावीरप्रसाद द्विवेदी की संस्कृत एवं अनूदित कविताओं में वर्णित युगीन संदर्भो का विवेचन होगा।

पंचम अध्याय में परवर्ती काव्यधारा पर महावीरप्रसाद द्विवेदी के काव्य–लेखन के प्रभाव का विवेचन होगा।

षष्ठ अध्याय में द्विवेदी जी के आलोचना और मुख्यतः उनके कविकर्म की प्रासंगिकता का मूल्यांकन किया जाएगा। संपूर्ण विश्लेषण से यह समझने में सुविधा होगी कि द्विवेदी जी की कविताएँ अतीत–गौरव, स्वाधीनता, स्वदेशानुराग एवं स्वदेशी आंदोलन जैसे युगीन संदर्भों से किन रूपों में गहरे स्तर से प्रभावित थीं।

महावीरप्रसाद द्विवेदी की कविताओं में युगीन–संदर्भ

संभावित अध्यायीकरण

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय : महावीरप्रसाद द्विवेदी : व्यक्तित्व और कृतित्व

द्वितीय अध्याय : समाज, साहित्य और युगीन–संदर्भ

तृतीय अध्याय : महावीरप्रसाद द्विवेदी की कविताओं में युगीन–संदर्भ

चतुर्थ अध्याय : संस्कृत एवं अनूदित कविताओं में युगीन–संदर्भ

पंचम अध्याय : परवर्ती हिंदी कविताओं में वर्णित युगीन–संदर्भो पर द्विवेदी जी का प्रभाव

षष्ठ अध्याय : महावीरप्रसाद द्विवेदी की कविकर्म की प्रासंगिकता

उपसंहार :

परिशिष्ट : (क) आधार ग्रंथों की सूची

(ख) सहायक ग्रंथों की सूची

(ग) पत्र–पत्रिकाएँ

(घ) अन्य

आधार ग्रंथ :

1 यायावर, डॉ, भारत, (संपादक) महावीरप्रसाद द्विवेदी रचनावली, (चौदह खंड), किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण– 1996 ई,

2 यायावर, डॉ, भारत, (संपादक), महावीरप्रसाद द्विवेदी : रचना संचयन, साहित्य अकादमी, रवींद्र भवन– 35, फिरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली– 110001

सहायक ग्रंथ :

1 डॉ, नगेंद्र, आस्था के चरण, नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, दिल्ली, प्रथम संस्करण1968 ई.

2 डॉ. नगेंद्र, रस–सिद्धांत, नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1968 ई.

3 डॉ. नगेंद्र, (संपादक) हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा– 201301 तैतीसवाँ संस्करण– 2006 ई.

4 डॉ, रघुवंश, साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्रथम संस्करण 1963 ई.

5 डॉ, रघुवंश, समसामयिकता और आधुनिक हिंदी कविता, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा– 5, प्रथम

संस्करण– 1972 ई

6 द्विवेदी, आचार्य, हजारीप्रसाद, विचार और तर्क–वितर्क, सुषमा साहित्य मंदिर, जवाहरगंज, जबलपुर, संस्करण वर्ष– संवत 2022.

7 पंत, सुमित्रानंदन, तारापथ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,

8 बाबू, श्यामसुंदरदास, साहित्यालोचन, नागरी प्रचारिणी सभा काशी,

9 बाजपेयी, आचार्य, नंददुलारे, हिंदी साहित्य : बीसवीं शताब्दी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण– 1970 ई

10 बाजपेयी, आचार्य, नंददुलारे, आधुनिक साहित्य, भारती भंडार, इलाहाबाद, संस्करण वर्ष– संवत 2022.

11 शर्मा, नलिनविलोचन, दृष्टिकोण, पुस्तक भंडार, पटना, प्रथम संस्करण– 1947 ई.

12 शर्मा, डॉ, रामविलास, महावीरप्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरी आवृत्ति– 2010 ई.

13 शर्मा, डॉ, रामविलास, संस्कृति और साहित्य, किताब महल, प्रयागराज, द्वितीय संस्करण 1953 ई.

14 शर्मा, डॉ, रामविलास, (संपादक) राग–विराग, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद

15 शुक्ल, आचार्य, रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

16 शुक्ल, आचार्य, रामचंद्र, चिंतामणि– दूसरा भाग, सरस्वती मंदिर, काशी, 2002 विक्रम संवत

17 शुक्ल, आचार्य, रामचंद्र, रस–मीमांसा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, चतुर्थ संस्करण विक्रम संवत– 2023

18 सिंह, डॉ, नामवर, इतिहास और आलोचना, नया साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रकाशन वर्ष– 1962 ई.

19 सिंह, डॉ., नामवर, छायावाद, सरस्वती प्रेस, बनारस, प्रथम संस्करण 1955 ई

20 हरिऔध, उपाध्याय, अयोध्यासिंह, प्रियप्रवास,

पत्र–पत्रिकाएँ

1 सरस्वती, आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी, इंडियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश

2 प्रताप, गणेश शंकर विद्यार्थी, कानपुर, उत्तरप्रदेश

3 मर्यादा, कृष्णकांत मालवीय, प्रयाग, उत्तरप्रदेश

4 समालोचक, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, जयपुर

5 कर्मवीर, माखनलाल चतुर्वेदी, जबलपुर, मध्यप्रदेश

6 चाँद, रामरख सहगल, प्रयाग उत्तरप्रदेश

7 प्रभा, बालकृष्ण शर्मा ‘नवीन’, कानपुर उत्तरप्रदेश